Patrika (Indore), 16th June 2026, Page-02

#Education: अब लोकप्रिय ब्रांच नहीं-सुरक्षित भविष्य चुन रहे विद्यार्थी, जोसा-2026 के आंकड़े बता रहे उच्च शिक्षा का नया ट्रेंड

सिविल की वापसी, इलेक्ट्रिकल की उड़ान; इंजीनियरिंग में बदल रहा समीकरण

पत्रिका इंडेप्थ स्टोरी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. इंजीनियरिंग में प्रवेश को लेकर विद्यार्थियों की पसंद तेजी से बदल रही है। लंबे समय तक कंप्यूटर साइंस (सीएस) और आइटी को सुरक्षित विकल्प माना जाता था, लेकिन जोसा-2026 काउंसलिंग के आंकड़े बताते हैं कि अब छात्र केवल ट्रेंड नहीं, बल्कि भविष्य की नौकरी, उद्योगों की मांग और कॅरियर की स्थिरता को ध्यान में रखकर ब्रांच चुन रहे हैं, इसलिए आइआइटी इंदौर में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की डिमांड बढ़ी है तो एसजीएसआइटीएस में सिविल इंजीनियरिंग फिर से आकर्षित कर रही है। दोनों संस्थानों के 2025 और 2026 के ओपनिंग-क्लोजिंग रैंक की तुलना से साफ है कि इंजीनियरिंग शिक्षा में 'एक ही ब्रांच सबसे बेहतर' वाली सोच बदल रही है।

इलेक्ट्रिकल में बदलाव: आइआइटी इंदौर में कंप्यूटर साइंस अब भी सबसे ज्यादा प्रतिस्पर्धी शाखा बनी हुई है। 2026 के पहले राउंड में इसकी क्लोजिंग रैंक 1639 रही, जो पिछले साल 1628 थी। यानी टॉप रैंकर्स की पहली पसंद आज भी यही है। सबसे बड़ा सकारात्मक बदलाव इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में दिखा। इसकी क्लोजिंग रैंक 3673 से सुधरकर 3113 पर पहुंच गई। इसका मतलब है कि पहले की तुलना में बेहतर रैंक वाले छात्रों ने इस शाखा को चुना। विशेषज्ञों के अनुसार इलेक्ट्रिक व्हीकल, सेमीकंडक्टर, चिप डिजाइन और ऊर्जा क्षेत्र में बढ़ती संभावनाओं का असर सीधे छात्रों की पसंद पर दिखाई दे रहा है।

स्पेस साइंस और केमिकल में रुचि कम

आइआइटी इंदौर की पहचान मानी जाने वाली स्पेस साइंस एंड इंजीनियरिंग शाखा की क्लोजिंग रैंक 6548 से बढ़कर 7221 पहुंच गई। इसी तरह केमिकल इंजीनियरिंग की क्लोजिंग रैंक 7508 से बढ़कर 8340 हो गई। इससे संकेत मिलता है कि छात्र अब उन क्षेत्रों को प्राथमिकता दे रहे हैं जिनमें प्लेसमेंट और उद्योग से जुड़ी संभावनाएं ज्यादा दिखाई देती हैं।

मैथेमेटिक्स एंड कम्प्यूटिंग बना मजबूत विकल्प

एआइ, डेटा साइंस और क्वांटिटेटिव फाइनेंस जैसे क्षेत्रों के विस्तार का असर मैथेमेटिक्स एंड कम्प्यूटिंग पर भी दिखा है। इसकी मांग लगभग स्थिर बनी हुई है और यह सीएसई के बाद सबसे पसंदीदा विकल्पों में शामिल है।

इलेक्ट्रॉनिक्स शाखाओं में भी मिश्रित रुझान

इलेक्ट्रॉनिक्स एंड टेलीकम्यूनिकेशन और इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंस्ट्रूमेंटेशन दोनों शाखाओं में क्लोजिंग रैंक बढ़ी है। हालांकि विशेषज्ञ मानते हैं कि सेमीकंडक्टर मिशन और इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग में निवेश बढ़ने के बाद आने वाले सालों में इन शाखाओं की मांग फिर बढ़ सकती है।

मैकेनिकल की स्थिति स्थिर

दोनों संस्थानों में मैकेनिकल इंजीनियरिंग की मांग अपेक्षाकृत स्थिर बनी हुई है। यह बताता है कि ऑटोमोबाइल, मैन्युफैक्चरिंग और औद्योगिक क्षेत्र से जुड़े अवसर अब भी छात्रों को आकर्षित कर रहे हैं।

आइआइटी इंदौर

ब्रांच	ओपन/क्लोज/2025	ओपन/क्लोज 2026
केमिकल	5414/7508	7007/8340
सिविल	8139/9821	8700/10389
इलेक्ट्रिकल	2390/3673	2222/3113
सीएस	952/1628	1186/1639
फिजिक्स	5236/6736	5919/6793
मैथेमेटिक्स एंड कम्प्युटिंग	1678/2008	1759/2017
मैकेनिकल	4506/6741	5172/7079
मैटेलर्जिकल	8439/10500	7464/10764
स्पेस साइंस	4860/6548	6183/7221

एसजीएसआइटीएस

ओपन/क्लोज/2025
ओपन/क्लोज 2026

- बायोमेडिकल 41020/44024, 51099/58429
- सिविल 50074/54761 43691/52234
- सीएस 9767/21533 21462/28156
- इलेक्ट्रिकल 32812/41294 40254/45737
- इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंस्ट्रूमेंटेशन 22415/39962 39308/41730
- इलेक्ट्रॉनिक्स एंड टेलीकम्युनिकेशन 21602/35170 29799/38018
- इंडस्ट्रियल एंड प्रोडक्शन 54412/58539 50710/58807
- आइटी 22649/26568 31685/34882
- मैकेनिकल 36547/47041 38405/46039

क्या कहता है पूरा ट्रेंड?

जोसा-2026 के पहले चरण के आंकड़े बता रहे हैं कि अब विद्यार्थी केवल सबसे लोकप्रिय ब्रांच नहीं, बल्कि सबसे बेहतर कॅरियर विकल्प तलाश रहे हैं।

- एआइ और डेटा साइंस ने सीएसई को मजबूत बनाए रखा है।
- इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग को सेमीकंडक्टर और ईवी सेक्टर का फायदा मिल रहा है।
- आइटी और कुछ पारंपरिक शाखाओं में पहले जैसी प्रतिस्पर्धा नहीं रही।
- छात्र अब बहुआयामी कॅरियर विकल्पों पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

बड़ा बदलाव: कंप्यूटर साइंस का आकर्षण बरकरार, लेकिन दबदबा नहीं

राज्य के प्रमुख इंजीनियरिंग संस्थान एसजीएसआइटीएस में तस्वीर कुछ अलग है। यहां कंप्यूटर साइंस और आइटी का आकर्षण बना हुआ है, लेकिन पहले जैसा दबदबा नहीं दिख रहा। सीएसई की क्लोजिंग रैंक 21,533 से बढ़कर 28,156 हो गई, जबकि इलेक्ट्रिकल की क्लोजिंग रैंक 26,568 से बढ़कर 34,882 पहुंच गई। आंकड़े बताते हैं कि छात्र अब केवल सॉफ्टवेयर सेक्टर पर निर्भर नहीं रहना चाहते। आइटी क्षेत्र में पिछले दो साल के दौरान भर्ती की धीमी गति और एआइ आधारित ऑटोमेशन की चर्चाओं ने भी इस बदलाव को प्रभावित किया है।